The Blueprint of your project may have the following aspects:

1) **Brief introduction of the project**

उत्तर बिहार के मिथिला क्षेत्र का प्रमुख सामाजिक उत्सव है "सलहेस उत्सव"। इस उत्सव का आयोजन मुख्य रूप से दलित वर्ग-दुसाध जाति के लोग ही करते हैं परंतु इसके आयोजन में समाज के सभी वर्गों के लोगों की सक्रिय भागीदारी होती है। प्राचीन काल से ही जातिगत आधार पर विभाजित समाज को सलहेस उत्सव एक दूसरे को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। पाँचवीं-छठी शताब्दी के 'महिसौंथा' राज्य के महाप्रतापी राजा सलहेस, उपेक्षित वर्ग के लोगों के संरक्षक के रूप में जाने जाते है तथा तत्कालीन सामाजिक संरचना को सुदृढ़ कर समाज को जोड़ने का काम किया। यही कारण है की वे मिथिला समाज में लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। सामाजिक मान्यता के अनुसार राजा सलहेस समाज के कमजोर वर्ग के ही नहीं बल्कि जीव-जन्तु के बहुत बड़े रक्षक हैं। आज भी समाज के किसान या पशुपालक वर्ग अपने पशुओं के रक्षार्थ सलहेस से मन्नत मांगते हैं। यह धारणा केवल हिन्दू ही नही मिथिला के मुसलमान संप्रदाय में भी है।

सलहेस पूजा वैसे तो एक दिवसीय पूजा है परंतु इसके आयोजन से लगभग महीन-दो महीना पहले सलहेस भगैत लोक-गायन टीम गाँव भर में घर-घर जाकर भगैत गाते हैं और सभी वर्ग के लोगों को सलहेस उत्सव के आयोजन हेतु चन्दा ईकट्ठा करते हैं। समाज का सभी वर्ग इस पर्व के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षारत रहते हैं। पूजा के दिन सलहेस, कुसुमा की मिट्टी से बनी मूर्ती की स्थापना 'गहबर' (पूजा का स्थान) में करते हैं जिसे मिथिला के ही शिल्पकार जाति-कुम्हार बनाते हैं। सलहेस की मूर्ती पर मिथिला चित्रकला का भी इस्तेमाल कराते हैं। आमतौर पर सलहेस का गहबर खुले में होता है परंतु कई स्थानों पर समाज के लोगों ने स्थायी मंदिर भी बन दिया है।

वर्तमान समाज में पारंपरिक विरासतों की कम हो रही प्रासंगिकता चिंता का विषय है जिसे पुनर्प्रयोग में लाना अनिवार्य है। हमारा लक्ष्य-इस परियोजना के माध्यम से मिथिला के इस महत्वपूर्ण सामाजिक उत्सव के सभी पक्षों से संबधित डाटा संकलन कर संदर्भ सूची का निर्माण करना है।

2) **Objectives of the research, data creation or documentation of the project**

आनेवाली पीढ़ी को अपने पारंपरिक मूल्यों से परिचय कराने तथा अपने अमूर्त संस्कृति को पुन: व्यवहार में लाने के उद्देश्य को लक्षित कर इस सामाजिक उत्सव की वर्तमान स्थिति को आँकने के लिए सलहेस उत्सव के प्रभाव क्षेत्र – मिथिला के यथासंभव भाग में एक सर्वे कर डाटा का संग्रह किया जा रहा है। इस सर्वे के बाद सलहेस उत्सव जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक उत्सव की वर्तमान स्थिति का आंकलन किया जा सकता है। इस परियोजना से प्राप्त तथ्यों के आधार पर सलहेस उत्सव के संरक्षण, संवर्धन आदि जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए योजना तैयार करने में, साथ ही विश्व फ़लक पर इसे प्रसारित करने में सहायक सिद्ध होगा।

3) **Implementation of the project**

सलहेस उत्सव प्रभाव क्षेत्र में स्थानीय सरकारी तंत्र जैसे – ज़िला परिषद, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत जैसे सरकारी संस्था; स्थानीय गैरसरकारी संस्थाओं एवं संबन्धित समाज के लोगों के सहयोग लिया जा रहा है। डाटा संकलन में वर्तमान तकनीक का भी प्रयोग किया जा रहा है। चूंकी सलहेस उत्सव का प्रभाव क्षेत्र में बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्र है फिर भी व्यक्तिगत दौरे के अलावे यथासंभव उपलब्ध तकनीक जैसे – ईमेल, फोन, इन्टरनेट आदि पर भी सूचना ईकट्ठा किया जा रहा है। इन सबके अलावे विषय विशेषज्ञों से संपर्क भी किया जाएगा। इन सभी स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के संकलित किया जाना है।

परियोजना को निम्नलिखित चार चरणों में पूरा किया जाएगा:

प्रथम चरण - सलहेस गहबर, भागता एवं मानर, ढ़ोल झाल बजानेवाले व गाने वाले कलाकारों का आकडा एकट्ठा किया जा रहा है।

दूसरा चरण – संकलित डाटा को सूचीकरण किया जाएगा।

तृत्रीय चरण- परियोजना के तीसरे चरण में इन आकड़ों से उत्पन्न होने वाले प्रमुख समस्याओं पर स्थानीय विद्वजनों, एक्सपर्टों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों के साथ विमर्श किया जाएगा।

चौथा चरण – इस चरण में समूची परियोजना से प्राप्त सभी आकड़ें, तथ्यों सहित अंतिम रिपोर्ट अकादेमी में जमा किया जाएगा।

इस परियोजना को पूरा करने में अप्रैल 2014 से फरवरी 2015 तक लगभग एक साल का समय लगेगा।

4) Time frame of the project

चार चरणों में पूरा किए जानेवाले इस परियोजना में लगभग एक वर्ष (अप्रैल 2014 से मार्च 2015) का समय लगने का अनुमान है। प्रथम चरण में लगभग 9 महीने, द्वितीय तृतीय व चतुर्थ चरण प्रत्येक में एक महीने का समय लगेगा।

5) Specific areas of the respective state in which the art form (s) is practiced- Geographical, typographical and other related aspects that the project may cover

सलहेस उत्सव उत्तर बिहार के मिथिला क्षेत्र के मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, जिलों में बड़े स्तर पर मनाई जाती है तथा बेगूसराय, भागलपुर, मुंगेर, वैशाली, पूर्णिया, आदि जिलों के मैथिल भाषी समाज के लिए यह एक प्रमुख सामाजिक उत्सव है।

6) Photos (preliminary level) related to the project/art form (for the intended website)

टोला-डीह, गाँव-भटसिमर, ज़िला-मधुबनी, बिहार के सलहेस गहबर में आयोजित सलहेस पूजा का दृश्य

टोला-खतुआहा गाँव-भटसिमर पश्चिम, ज़िला-मधुबनी, बिहार के सलहेस गहबर में आयोजित सलहेस पूजा का दृश्य

टोला-खतुआहा गाँव-भटसिमर पश्चिम, ज़िला-मधुबनी, बिहार के सलहेस गहबर में आयोजित सलहेस पूजा का दृश्य

टोला-खतुआहा गाँव-भटसिमर पश्चिम, ज़िला-मधुबनी, बिहार के सलहेस गहबर में आयोजित सलहेस पूजा का दृश्य

7) Conclusion of the project as you have envisioned

सलहेस उत्सव का संदर्भ सूची बनाने के लिए डाटा कलेक्शन परियोजना पर तक किए गए कार्य के आधार पर पाया गया है कि लगभग हर वह पंचायत जिसमें दुसाध वर्ग के लोग रहते हैं उस पंचायत में सलहेस का गहबर है। तथा गाँव में तीन चार भगता और वाद्क होते हैं। हर सलहेस गहबर का अपना एक किर्तन मंडली होता है। इस मंडली में झाल, ढोल/मृदंग, मानर आदि बजाने वाले और भगैत गायक होते हैं। सलहेस उत्सव हमारे समाजिक संतुलन और संरचना के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। समाज में मुख्य रूप से सेवक वर्ग में दुसाध के देवता सलहेस तथा पशुपालक वर्ग 'यादव' के देवता 'भुईयाँ बाबा' दोनों मित्र थे तथा सलहेस की पूजा वगैर भुईयाँ बाबा की पूजा से सम्पूर्ण नहीं माना जाता है। इससे पता चलता है कि सामाजिक संतुलन और सौहार्द की परंपरा को कायम रखने में इस प्रकार के सामाजिक उत्सवों का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत परियोजना पर आगे कार्य जारी है तथा कार्य के दौरान सामने आने वाले सभी तथ्यों को आगे के रिपोर्ट में शामिल किया जाएगा।

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य:

परियोजना - सलहेस उत्सव, बिहार के लिए संदर्भ सूची (inventory) के निर्माण हेतु सर्वे एवं डाटा संकलन

कार्यक्षेत्र - मिथिला क्षेत्र, उत्तर बिहार, भारत

2. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में) –

सलहेस उत्सव/ सलहेस पूजा
SALHES UTSAV / SALHES POOJA

3. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण -

समुदाय - 'दुसाध' (दलित जाति)
भाषिक क्षेत्र - मिथिला
भाषा - मैथिली व बज्जिका

4. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)

वैसे तो सलहेस उतसव मिथिला के दुसाध जाति विशेष के द्वारा की जाती है तथा इसी जाति लोग इसके सबसे बड़े संवाहक है परंतु इस आयोजन में समस्त समाज की भूमिका होती है। सलहेस उत्सव के संदर्भ सूची के निर्माण के उद्देश्य से डाटा संकलन कार्य चल रहा है। अब तक किए गए डाटा संकलन की सूची संलग्न है।

5. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है| -

सलहेस उत्सव उत्तर बिहार के मिथिला क्षेत्र के जिलों - मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, के अलावे नेपाल के मिथिला क्षेत्र का प्रमुख सामाजिक उत्सव है।

6. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा / उसका विवरण

1 . मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है) -
2 . प्रदर्शनकारी कलाएं
3 . सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि
4 . ~~प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं~~
5 . पारंपरिक शिल्पकारिता
6 ~~. अन्यान्य~~

7. कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें

'सलहेस उत्सव' को हिन्दू समुदाय के दुसाध ('दलित' जाति) द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसी समुदाय के विभिन्न भगतों (पुजारी), भगैत गायकों, मानर बजानेवालों, वादकों आदि की टोली इसके आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। मुख्यत: भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की यह जाति मिट्टी की मूर्ती (घुडसवार) रूप में सलहेस देवता की पूजा करते हैं और प्रसाद बांटकर खुशियाँ मनाते हैं। 'कुम्हार' समुदाय मीट्टी के खुडसवार देवता की मूर्ती बनाकर इस सांस्कृतिक विरासत के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। कुम्हार जाति, मिथिला का एक अलग वंचित समुदाय है तथा इस जाति के लोग मिट्टी के शिल्प कौशल में निपुण होते हैं।

प्राचीन काल से ही जातिगत आधार पर विभाजित समाज को सलहेस उत्सव एक दूसरे को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। पाँचवीं-छठी शताब्दी के 'महिसौंथा' राज्य के महाप्रतापी राजा सलहेस, उपेक्षित वर्ग के लोगों के संरक्षक के रूप में जाने जाते है तथा तत्कालीन सामाजिक संरचना को सुदृढ़ कर समाज को जोड़ने का काम किया। यही कारण है की वे मिथिला समाज में लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। सामाजिक मान्यता के अनुसार राजा सलहेस समाज के कमजोर वर्ग के ही नहीं बल्कि जीव-जन्तु के बहुत बड़े रक्षक हैं। आज भी समाज के किसान या पशुपालक वर्ग अपने पशुओं के रक्षार्थ सलहेस से मन्नत मांगते हैं। यह धारणा केवल हिन्दू ही नही मिथिला के मुसलमान संप्रदाय में भी है।

सलहेस पूजा वैसे तो एक दिवसीय पूजा है परंतु इसके आयोजन से लगभग महीन-दो महीना पहले सलहेस भगैत लोक-गायन टीम गाँव भर में घर-घर जाकर भगैत गाते हैं और सभी वर्ग के लोगों को सलहेस उत्सव के आयोजन हेतु चन्दा ईकट्ठा करते हैं। समाज का सभी वर्ग इस पर्व के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षारत रहते हैं। पूजा के दिन सलहेस, कुसुमा की मिट्टी से बनी मूर्ती की स्थापना 'गहबर' (पूजा का स्थान) में करते हैं जिसे मिथिला के ही शिल्पकार जाति-कुम्हार बनाते हैं। सलहेस की मूर्ती पर मिथिला चित्रकला का भी इस्तेमाल कराते हैं। आमतौर पर सलहेस का गहबर खुले में होता है परंतु कई स्थानों पर समाज के लोगों ने स्थायी मंदिर भी बन दिया है।

8. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है ?

सलहेस उत्सव का सबसे बड़ा संवाहक मिथिला के दुसाध जाति के लोग हैं। इसी जाति के व्यक्तियों द्वारा इसका आयोजन होता है। वैसे तो मिथिला मे मुख्य पुजारी जाति ब्राह्मण हैं परंतु सलहेस उत्सव में सलहेस देवता की पूजा दुसाध जाति के लोग खुद ही करते हैं परंतु इसमें भागीदारी और सहभागिता सभी जाति के लोगों का होती है। इस पूजा में भगत-आयोजन का मुख्य पुजारी, भगैत-गायक, मानर, झाल-ढ़ोल आदि बजाने वाले कीर्तन मंडली, इसी जाति होते हैं। आयोजन के समय

रसनचौकी या ढ़ोल-पीपही भी बजती है जिसे बजाने वाले चमार (मिथिला के एक अन्य दलित जाति) के लोग है। सलहेस की मिट्टी की मूर्ती बनाने वाले 'कुम्हार' (शिल्पकार जाति) के लोग होते हैं। आयोजन के समय अपने-अपने दु:खों को लेकर भगत से निदान पाने के लिए 'भाऊ' कराने के लिए 'डाली' रखने के लिए सभी जाति और धर्म के लोग उपस्थित रहते है। इस पारंपरिक आयोजन से संबन्धित सभी जातियों में अपने चलन/कला को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होता है। यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की यात्रा सामाजिक-दैनिक अभ्यास के माध्यम से तय करती है।

9. ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है?

प्राचीन लिखित स्रोत व मिथिला के मौखिक परंपरा के अनुसार यह त्योहार अति प्राचीन काल से ही मानाया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार राजा सलहेस नेपाल के मिथिला और तराई क्षेत्र (तलहटी) पर शासन किया। उन्होने एक राजा के रूप में समाज के दलित वर्गों के रक्षक के रूप में जाने जाते थे शायद यही कारण था की कालांतर में लोक देवता के रूप में सर्वमान्य हुए।

सलहेस उत्सव के आयोजन की प्रक्रिया में विभिन्न सामग्री जुटाने के के लिए समाज में चन्दा ईकट्ठा करने और कुम्हार जाती द्वारा मिट्टी की मूर्ति बनाने के साथ शुरू होता है। मिट्टी के अलावे इसमें इस्तेमाल किए जाने वाले तत्व हैं-लकड़ी, चावल की भूसी और गोबर आदि सुलभ रूप से उपलब्ध स्वदेशी और पर्यावरण के अनुकूल है वस्तुएँ हैं। अस्थाई भट्टों (आवा) में इस मिट्टी की मूर्ति को पकाया जाता है फिर लोकचित्र परंपरा जैसे मिथिला पेंटिंग्स, मौर पेंटिंग्स आदि पेंटिंग्स मूर्ती पर की जाती है। इन घोड़ों के सवार मूर्ती को सजाने के लिए मजबूत और जीवंत रंग व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। 1960 और 70 के, तक, कुम्हार प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल कराते थे परंतु आज-कल बाजार में उपलब्ध रेडीमेड रंग का इस्तेमाल किया जाता है।

10. आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता हैं?

प्राचीन भारतीय के तरह ही मैथिल समाज परंपरागत रूप से वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। इसमें चार वर्ण - ब्राह्मण (गुरू, शिक्षक, पुजारी), क्षत्रिय (शासक, योद्धा, और जमींदार), वैश्य (व्यापारी) और शूद्र (कारीगरों, सेवक, मजदूर) थे। इसमें सामाजिक मान्यता के अनुसार क्रमागत रूप से समाज में स्थान भी था। सबसे उच्च ब्राह्मण, उसके बाद क्षत्रिय, फिर वैश्य और अंत में शूद्र। पहले तीन वर्ण के अपेक्षा चौथे वर्ण की सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक स्थिति सबसे उपेक्षित था। इसी चौथे वर्ण के अंतर्गत दुसाध, कुम्हार चमार आदि जाति आते हैं। पहले के समय में इन जातियों को मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी कमोवेश यही स्थिति आज भी है। आदि काल से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आध्यात्मिक रूप से हाशिये पर पड़ी ये जातियाँ अपनी देवताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के लिए एक सामानांतर देवताओं के लिए उत्सव यथा संभव मंदिर की स्थापना की। जिससे इन जातियों का आत्म-गौरव बढ़ता है तथा अपनी अलग सांस्कृतिक-सामाजिक पहचान भी कायम है।

सलहेस उत्सव के आयोजन का सबसे बड़ा सामाजिक पाक्स यह है की समाज में प्रमुख श्रमिक वर्ग - दुसाध, चमार, मुसहर; पशुपालक वर्ग-यादव (ग्वाला) आदि के 'कुल-देवता' अलग-अलग हैं। जैसे-दुसाध जाति के सलहेस, मुसहर जाति के दीनाभद्री, यादव (ग्वाला) जाति के कारू बाबा आदि। इन सभी देवताओं में से एक देवता की पूजा में अन्य सभी देवताओं के भाग निश्चित होता है, दूसरे शब्दों में एक जाति के कोलदेवता की पूजा में अन्य सभी जातियों के कुल-देवताओं की भी पूजा होता है। प्राचीन सामाज में जातिगत समरसता बनाने के लिए भी में इन लोक देवताओं की पूजा से संबन्धित आयोजन की अहम भूमिका है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सामाजिक-सांस्कृतिक रू से अतिआवश्यक है।

11. क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ

है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

सलहेस उत्सव के आयोजन में और इसके आयोजन के समूची प्रक्रिया में मानवाधिकार तथा देश के कानून का उलंगन नाही होता बल्कि सामाजिक समरसता ही बढ़ता है।

13. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है ?

सलहेस उत्सव के आयोजन और इससे संबन्धित सभी प्रयोजन, संवाद आदि समाज में पारदर्शिता, सजगता और प्रोतसाहन सुनिश्चित करती है। सलहेस उत्सव का आयोजन वैसे तो अनुष्ठाणिक है परन्तु इसके आयोजन से सामाजिक सदभावना ही बढ़ती है।

14. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं। उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है |

1. औपचारिक एवं अनोपचारिक तरीक़े से प्रशिक्षण (संचरण)
2. पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध
3. रक्षण एवं संरक्षण
4. संवर्धन एवं बढ़ावा
5. पुनरुद्धार / पुनर्जीवन

सलहेस उत्सव के आयोजन से संबन्धित सभी घटकों के लिए किसी प्रकार का कोई औपचारिक या नौपचारिक प्रशिक्षण का प्रावधान नहीं है। यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सामाजिक लोकजीवन में अभ्यास के माध्यम से ट्रांसफर होती है।

मिथिला के लोक कलाओं में राजा सलहेस का महत्वपूर्ण स्थान है। मैथिली में राजा सलहेस के ऊपर 'सलहेस नाच' नाम से एक लोक नाट्य शैली है साथ ही गाथा गायन परंपरा के अंतर्गत राजा सलहेस गाथा गायन मिथिला की प्रमुख परंपरा है।

इसके अलावे भगैत आदि जैसे लोक परंपरा सलहेस के ऊपर आज समाज में स्थापित है। इसी परंपरा के माध्यम से सलहेस उत्सव का प्रलेखन, दस्तावेजीकरण आदि की जाती है। आज-कल समाज में आडियो-वीडियो माध्यम का भी इस्तेमाल किया जाने लगा है। साथ ही सलहेस की गाथा-गायन भी बाज़ार में आने लगे हैं।

15. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें |

कुछ स्वयंसेवी संगठनो के छिट-फुट प्रयासों के अलावे स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सलहेस उत्सव के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा कोई ठोस उपाय नही किए गए हैं। कई स्थानों पर स्थायी सलहेस गहबर भी उपलब्ध नही है। आयोजन से संबन्धित सभी व्यवस्था स्थानीय समाज के द्वारा ही किया जाता है।

16. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का व्योरा दें |

आज के परिप्रेक्ष्य में सलहेस उत्सव की जीवंतता और भविष्य खतरे में है क्योंकी नई पीढ़ी में इसकी प्रासंगिकता घटती जा रही है। नतीजन समुदाय के लोगों की सहभागिता इस महत्वपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के आयोजन में घटती जा रही है। कहीं ना कहीं इसके पीछे समाज और स्थानीय शासन की उदासीनता भी इसका प्रमुख कारण है।

17. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ? (इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |)

सलहेस उत्सव के संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय करने अत्यंत आवश्यक है:

- सलहेस उत्सव के लिए डाटा संकलन कर संदर्भ सूची का निर्माण
- इस उत्सव के संगठित रूप से गहबारों का निर्माण
- अत्यंत वृद्ध भगताओं द्वारा नई पीढ़ी के लिए कार्यशालाओं का आयोजन , प्रलेखन अनुसंधान के लिए समर्थन, सहायता
- गुरुओं (परास्नातक) के लिए प्रदर्शन के अवसर, प्रसार और पेंशन.
- परियोजना पारंपरिक ज्ञान, कला, शिल्प के बारे में जागरूकता पैदा करने और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन
- कुम्हार युवा सदस्यों/कलाकारों के लिए प्रशिक्षण
- एक कोर ग्रुप मिथिला के कई स्थानों में स्थापित करना
- शोधकर्ता, विद्वानों और गैर सरकारी संगठनों के शव की
- वीडियो, ऑडियो और फ़ोटो दस्तावेज़ीकरण के माध्यम से प्रलेखन
- समूह चर्चा, प्रदर्शनियों और संगोष्ठी का आयोजन
- सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक संदर्भ लेकर सलहेस उत्सव के ऊपर प्रकाशन
- सलहेस उत्सव शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए

18. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

सलहेस उत्सव के संरक्षण के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से बढ़ावा देने के लिए कई विद्वानों ने अपने-अपने स्तर पर कार्य किए है। महेंद्र मलांगिया राजा सलहेस विषय पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किए है। इसके अलावे राम लखन राम 'रमन', महेंद्र पासवान, बूचरू पासवान, संजय पासवान, महावीर पासवान आदि लोगों ने अलग-अलग रूप से सलहेस उत्सव के लिए कार्य किए है। मधुबनी के लक्ष्मी पासवान ने जहां अपने क्षेत्र-बाबूबरही क्षेत्र में विभिन्न सलहेस गहबरों को पुनरुद्धार के लिए कार्य कर रहे हैं वही। राजनगर क्षेत्र में होरिल पासवान, संजय पासवान आदि स्थानीय लोग सलहेस उत्सव के आयोजन को संगठित करने का कार्य कर रहे हैं।

19. सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से जुड़ें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य ग़ैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

1. संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम - अछिंजल,
2. सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क - लक्ष्मी पासवान
3. पता ग्राम - भूपट्टी, ज़िला - मधुबनी, बिहार
4. फोन नंबर : मोबाइल न. :
5. ईमेल :
6. अन्य सम्बंधित जानकारी

20. किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर(स्थानीय/राज्यकीय/ राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें |

अछिंजल
ग्राम - भूपट्टी,
ज़िला - मधुबनी, बिहार
ई-मेल - achhinjal@gmail.com

21. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों/व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों केबारे में हों |

- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
- दरभंगा म्यूजियम
- मैथिली अकादमी, पटना

- ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
- भूपेंद्र मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

नाम - यदुवीर यादव
पता - ग्राम - भूपट्टी,
ज़िला - मधुबनी,
बिहार